मुस्करा कर चल मुसाफिर

हम सभी जीवन-यात्रा के मुसाफिर हैं। यह जीवन यात्रा एक पडाव है, मंजिल नही। आगे और चलना है। आँधियों, तूफानों से लडकर विजयी होकर चलना है। हम देखते हैं कि प्रकृति का कण-कण देनेका, खूश रहने का, अथक बनने का, गुनगुनाने का और निर्विकार बनने का सन्देश देता है। हम देखते हैं कि सूर्य उदित होकर संसार को अपनी सुनहरी किरणों में स्नान करा देता है। शितल-सुरभित हवा मन्द -मन्द बहती मस्मी बिखेरती है। पक्षीवृन्द रस से सराबोर गीत गाकर परमपिता की उत्कृष्ट सृजन-कला का वर्णन विवरण- निरुपण सुनाते है। सरिताएँ कल-कल करती लहरियों के नूपूर झंकारती हूई बढती जाती हैं और पुष्पों पर गुंजारित मदमाते भ्रमर आनंद के गीत गाते है। इस प्रकार, पृथ्वी का अनु-अनू, कण-कण समृध्दि, प्रेम, सुख, एकता आनंद को प्रवाहित करते हूए हमें सदा प्रसन्न रहने का सन्देश दे रहा है। प्रसन्न रहने से ऱ्हदय कमल खिला रहता है। मुखाकृति पर उल्लास-उत्साह उमंग दिखाता है। मन प्रेममय, स्वच्छ, निश्छल, भार-रहित एवं पवित्र बनता है। दिव्य सामर्थ्य विकसित होते है। इसलिए कहा गया है कि खुश रहिए। यह मुस्कराहट आन्तरिक संस्थानों को उत्फुल्ल करेगी, स्फुर्ती एवं ताजगी से भरेगी, कार्य में मन लगेगा, शरीर का स्वास्थ भी उत्तम रहेगा।

मन की प्रसन्नता का उत्तम प्रभाव कर्मेन्द्रियों पर भी पडता है। धीरे-धीरे मुस्कराहट स्थायी रुप से जैसे स्वभाव का अभिन्न अंग बन जाती है। हर्षितमुख व्यक्ति का सर्वत्र स्वागत होता है। कहा भी है कि हँसो तो संसार साथ में हँसेगा, रोये तो अकेले रोते रहो। मुस्कराते रहने से शरीर के आन्तरिक अवयवों तथा माँसपेशियों का व्यायाम होता है। थकावट दू हो सहज स्फुर्ति प्राप्त होती है। मुस्कराहट प्रभु व्दारा मनुष्य जाती को मिला एक अमूल्य वरदान है। पर हमारी मुस्कराहट निर्दोष, निष्कपट व्यंग रहित हो। हास्यभाव पवित्र हो। यदि हमारे जीवन-आकाश में काले और श्वेत दो बादल दिखे तो हमश्वेत बादल को देखकर तो मुस्कराएँ ही, दुःख के काले बादल को देखकरभी मुस्कराएँ कि यह बरसेगा तो बरसे क्योंकि हमो ज्ञान है कि सारी सृष्टी तो एक नाटक है, जिसकी पुनरावृत्ति हो रही है। नाटक सही हू-ब-हू, यथार्थ रुप से वही चल रहा है जो कल्प पहले चला था। पिछली बार भी तो हमने यह सब देखा-परखा, झेला है। जो हूआ है वह हो रहा है। बनी बनाई बन रही है। परमपिता मेरे साथ है। वे तो ज्ञान सागर है। वे ज्ञान-सुख-आनन्द की वर्षा कर रहे हैं। हमारा तृतीय नेत्र खुला है। हम प्रभू के अनुग्रह से वंचित क्यों रहे। स्वयं परमपिता हमें ज्ञान दे रहे है। सृष्टिचक्र बता रहे हैं। हम दैवी संबंध से प्रसन्न हैं। प्रभु की आत्मीयता एवं समीपता का निरन्तर अनुभव कर विकर्मातीत एवं देहातीत हो रहे है।

हमारी दृष्टि, वृत्ति, सृष्टि में एक विशेष मधूरता है। हम उन्हीं की स्नेहमयी छत्रछाया में हूँ। माया की छाया हमें छू नहीं सकती। उगर-मगर छोडकर हमने उन्हीं की डगर पकडी है। उनके हाथों मे मेरा हाथ है। वे जहॉ ले जाएँ, जैसे रखे। ऐसी खुशी मुझे प्रभु के दरबार में मिली है कि मेरा मन गा उड़ता है। खुशी मेरे दर से कहाँ जाएगी। यहॉ शान्ति की शक्ति, मधुरता का रस, निर्भयता का रक्षा-कवच, धैर्य का किला, निश्चिन्तता की सुरभी, सन्तुष्टता का तख्त, सर्व प्राप्तियों के अविनाशी रत्न, त्याग का शृंगार, एवं पवित्रता का ताज पाकर हमने स्वराज्य पा लिया है। हम यहाँ पूज्य-पूर्वज आत्मा की स्मृति में टिके हैं। अब हम प्रसाद मं जियेंगे, अवसाद में नही, प्रसन्न रहेंगे, अवसन्न (उदास) नही। हमारे जीवन में सर्वत्र हर्ष है, विषाद कहीं नहीं। जीवन की दीपशिखा सजीवता से प्रकाशमान है क्योंकि दिक में प्रसन्नता एवं आशा का तेल भरा है, स्निग्धता भरी है। झूझ्री आशा नही, प्रवचना का आशा नहीं, इतराने वाली आशा नहीं, सच्ची गतिशील आशा है। इसलिए मैं अपने को कहता हूॅ -

पथ पर चलना तुझे - तू मुस्कराकर चल मुसाफिर।

जिंदगी के राह में केवल, वही पंथी सफल है,

आँधियों में, बिजलियों मे जो रहे, अविरल मुसाफिर।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com